vf/kd vkenनी के लिए "समन्वित कृशि प्रणाली"

ifjp;&

श्री विजय सिंह s/o श्री रामजी लाल, गांव–लाधुवास, पोस्ट–सहारनवास जिला, रेवाड़ी का एक मिडल कक्षा पास 65 वर्षीय उन्नतशील किसान है। जिसके पास केवल 2.5 एकड़ खेती करने योग्य जमीन है। श्री विजय सिंहं पुश्तैनी खेती करते आ रहे है और साथ में पशुपालन व्यवसाय भी करते है। पंरपरागत खेती में वे खरीफ के सीज़न में बाजरा व ग्वार की फसल लेते है और रबी के सीज़न गेहूँ व सरसों की फसल लेते है लेकिन वर्त्तमान समय की मांग के अनुसार परंपरागत कृषि से इनको आय बहुत कम प्राप्त होती है इसलिए श्री विजय सिंह सन् 1995 से अखबार के माध्यम से कृषि विज्ञान केन्द्र रामपूरा में आए एवं वैज्ञानिकों सलाह मशविरा की तथा समन्वित कृषि प्रणाली अपनाने के लिए प्रेरित किया और समय–समय पर इन्होनें प्रशिक्षण भी प्राप्त किया, साथ 6 महीने चलने वाली माली प्रशिक्षण प्राप्त करके भी विजय सिंह ने नर्सरी लगाना, बाग लगाना, सब्जी प्रबन्धन करना, कलम लगाना व फूलों की खेती करना जैसी आदि विधायें सीखी जिससे श्री विजय सिंह काफी प्रभावित हुए एवं समन्वित कृषि प्रणाली द्वारा खेती करने का मन बनाया।

साथ ही रेवाड़ी व आसपास के क्षेत्रों में समन्वित कृषि प्रणाली द्वारा खेती करने वालों के यहाँ भ्रमण करवा कर इन्हें प्रेरित किया। इस तरह अब श्री विजय सिंह सन् 2003 से पूर्णतया समन्वित कृषि प्रणाली द्वारा खेती में जुट गये।

;kstuk] dk;kZou vkj lgk;rk &

केन्द्र द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण प्राप्त करके श्री विजय सिंह ने बेर व अमरूद का बाग लगाने का निर्णय लिया तथा वैज्ञानिकों के पर्रामश से उच्च गुणवत्ता वाले पौधे खरीदकर बाग लगाया जा सकता है और आधे एकड़ में फूलों की खेती शुरू कर दी। परिवार के सदस्यों कर सहायता की वजह से श्री विजय सिंह को काफी फायदा मिला व होसला मिला इनके जनून को बाग में खाली पड़ी ज़मीन में इन्होनें घिया, टमाटर व बंगाली सब्जी "पोई " लगाई क्योकि इनके खेत के आसपास के क्षेत्रों में ईंटों के बहुत भट्टे है जहाँ पर बंगाली मजदूर काम करते है। पाई की सब्जी का बीज भी श्री विजय सिंह ने इनसे ही मंगवाया। बचे हुए एक एकड़ मे भी श्री विजय सिंह उन्नत किस्मों का चयन करके बाजरा,ग्वार, सरसों व गेहूँ फसल चक्र के हिसाब से लेते हैं और कम से कम रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से बचने एवं गोबर की खाद एवं जैविक खाद के प्रयोग पर ज्यादा जोर देने की ठानी। गांव में इनके घर पर 6भैंस और 3 बछड़े व बछड़ियां हैं तथा इनकी देख–रेख के लिए परिवार के दो सदस्यों को इनकी जिम्मेदारी दी जिसमें संतुलित मात्रा में इनकी आहार व्यवस्था, घर पर खनिज मिश्रण युक्त बांटा बनाना, हरा चारा, टीकाकरण, एवं अन्य कार्य इनके परिवार के सदस्य करते हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र में अन्य किसान तथा अन्य विभागों व सरकारी संस्थानों से आये अधिकारियों को इनके यहाँ से ले जाकर कृषि विज्ञान केन्द्र, रामपूरा का एक सफलता का मॉडल बताते है ताकि अन्य किसान भी दनससे प्रेरणा लेकर इस प्रकार की खेती कर सके। श्री विजय सिंह ने सन् 2009–10 में वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन पर कृषि विज्ञान केन्द्र, रामपूरा में कौशल प्रशिक्षण प्राप्त किया और सन् 2011 की शुरूआत में इन्होनें स्वंय ही अपने खेत के एक मंत्र में 8बेड की ईकाई स्थापित की और ईंटों की चारदीवारी व छत बनाई और घर पर पशुओं द्वारा मिलने वाले गोबर का प्रयोग वर्मीकम्पोस्ट बनाने व खेत में प्रयोग करने लगे।

mRiknu&

श्री विजय सिंह ने समन्वित कृषि प्रणाली द्वारा खेती अपनाकर साल दर साल अधिक आमदनी प्राप्त करने लगे और इनके परिवार में सुख–समृद्धि आई। वर्तमान समय में इनके पास निम्न इकाईयां है इनके खेत पर–

- फल उत्पादन (बेर, अमरूद, करौंदा व नींबू)
- फुल उत्पादन (गैंदा, गुलाब)
- सब्जी उत्पादन(घिया, टमाटर ,"पोई")
- डेयरी ईकाई(6 दूधारू भैंस)
- फसल उत्पादन(बाजरा,सरसों व गेहूँ)
- वर्मी कम्पोस्ट(8 बेड)

सन् 2017–18 में भी श्री विजय सिंह के खेत का आर्थिक विश्लेषण देखी जाए तो एक एकड़ के बाग से ये 1,65,000 रू शुद्ध लाभ कमा रहे है। इंटरक्रोपिंग द्वारा सब्जियों से 1,46,000 रू शुद्ध आय प्राप्त कर रहे है। श्री विजय सिंह घिया के साथ घिया के पत्तों को भी 40 रू किलो की दर से मजदूरों को बेचते है व बंगाली सब्जी "पोई " भी 40 रू किलो के हिसाब से बेचते है। रोचक बात यह है कि भट्टे के मजदूर स्वंय इनके खेत पर जाकर ये सब्जियाँ खरीद लेते है। फूलों की खेती में आधे एकड से 1,15,000 रू मुनाफा कमा रहे है। श्री विजय सिंह मांग व भाव के हिसाब से मंडी तय करते हैं और जहाँ भाव मिलता है वहाँ जाकर फुल बेचकर आते हैं, रेवाड़ी के साथ–साथ पटौदी, गुड़गाव, दिल्ली आदि मंडियों तक फुल बेचकर अच्छा मुनाफा कमा लेते है। वर्मी कम्पोस्ट इकाई द्वारा पहले स्वंय अपने खेत में प्रयोग करने के बाद भी विजय सिंह एक वर्ष में 63,000 रू शुद्ध आय प्राप्त करते है। पशुपालन द्वारा 2,50,000 रू की आमदनी प्राप्त करते है तथा एकड़ में गेहूँ व सरसों की खेती करके एवं परिवार की जरूरत को पूरा करने के बाद 35,000रू तक आय प्राप्त करते है। इनकी विशेष बात यह है कि ये कम से कम रासायनिक उर्वरक प्रयोग करते है तो गांव में भी इनका गेहूँ अच्छे भाव में बिक जाता है।

ifj.kke&

समन्वित कृषि प्रणाली द्वारा खेती अपने आसपास के क्षेत्रों में प्रचलित हो गये, इनकी उपलब्धियों और कृषि के क्षेत्र में ननाचार कारण वर्ष 2011 में सर्वप्रथम खण्ड स्तर आयोजित किसान मेले में उन्नत किसान का पुरूस्कार एवं 10000रू का ईनाम प्राप्त किया। उसके उपरान्त विजय सिंह ने वर्ष 2013 में जिला स्तरीय किसान सम्मेलन में कृषि मन्त्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए 25000 रू एवं उन्नतशील किसान का ईनाम भी प्राप्त किया। इस प्रकार विजय सिंह ने जिला स्तरीय किसान सम्मेलन में सर्वोच्च किसान का 26 जनवरी 2014 में पुरूस्कार जीता और रेवाड़ी जिलों के अन्य किसानों के लिये प्रेरणा स्त्रोत बने। वर्ष 2014 में ही 19 जनवरी को झज्जर में आयोजित राज्य–स्तरीय किसान सामारोह में कृषि व सहबद्ध क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए उन्नत किसान के पुरूस्कार सम्मानित किया। श्री विजय सिंह ने रोहतक में आयोजित किसान मेले में 14 जनवरी 2014 को ही पूर्वमुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा द्वारा सर्वोच्च किसान का पुरूस्कार व 50,000 का चैक ईनाम स्वरूप दिया गया। श्री विजय सिंह ने अन्य कई ईनाम एवं पुरूस्कार जीत कर कृषि विज्ञान केन्द्र, रामपूरा एवं रेवाड़ी जिले का नाम रोशन किया हैं।

iHkko&

श्री विजय सिंह कृषि एवं समन्वित कृषि प्रणाली द्वारा खेती शुरू करने का जुनून होने से वह आज 600000रू से अधिक सालाना प्राप्त कर रहा हैं जिससे उसके परिवार वालों व गांव के किसानों की सोच भी बदलने पर मजबुर किया है। श्री विजय सिंह का मानना हैं कि कृषि आजिविका का साधन है, यदि सही सलाह और परामर्श कृषि वैज्ञानिकों से लिया जाए तो एक अच्छे व्यवसाय के तौर पर अधिक आय प्राप्त की जा सकती हैं।

lnश्क &

कृषि के प्रति सकारात्मक सोच, मजबूत ईच्छा शक्ति एवं कृषि की नवीनतम वैज्ञानिक तकनीक व नवाचार के प्रयोग से वर्तमान परिपेक्षण में कृषि जो घाटे का सौदा साबित हो रहा है उसको सफल कृषि व्यवसाय में तब्दील करके अधिक लाभ की स्थिती में परिवर्तित कर सकते है।